‘जय देवि’ आरती

ध्रुवपद

जय देवि जय देवि ललिते त्रिपुराम्बे।
भवसागरभयहारिणी त्रिगुणातीताम्बे।
जय देवि जय देवि॥

हे देवी, आपकी जय हो! हे देवी, आपकी जय हो!
हे सौन्दर्यमयी देवी ललिते! हे चेतना की तीन अवस्थाओं की जननी त्रिपुराम्बे!
हे माते, आप त्रिगुणातीत अर्थात् सत्त्व, रजस् व तमस्, तीनों गुणों के परे हैं।
आप जन्म-मृत्यु के सागर के भय को हरने वाली भवसागर-भयहारिणी हैं।
हे देवी, आपकी जय हो! हे देवी, आपकी जय हो!

पद १

मनदृढध्याने वित्ते ज्ञानामृतब्रह्मे
बीजे वर्णे मन्त्रे तन्त्रे यन्त्रे वा।
अमादिक्षमन्ते पूर्णाक्षरमाले
ह्रस्वदीर्घप्लुतबिन्दुश्रीशिवयुक्ताम्बे।
जय देवि॥

आप ब्रह्मज्ञान का अमृत हैं।
ध्यान द्वारा दृढ़ किए गए मन से आपकी अनुभूति होती है।
बीजाक्षरों में, संस्कृत के विभिन्न वर्णसमूहों में,
मन्त्रों, तन्त्रों और यन्त्रों [पवित्र आकृतियों] में आपकी अनुभूति होती है।
हे माते, महामहिमावान शिव से एकाकार आप
संस्कृत वर्णमाला के ह्रस्व, दीर्घ तथा प्लुत [तीन मात्राओं वाला स्वर या वर्ण] अक्षर हैं;
बिन्दु भी आप ही हैं।
हे देवी, आपकी जय हो!

पद २

मूले स्वाधिष्ठाने नाभौ हृदयस्थे
कण्ठे मुखजिह्वाग्रे वेदाक्षरसंस्थे।
नासिकाक्षिकर्णे भाले ब्रह्माण्डे
सहस्रपत्रे कमले पूर्णे दुकूलाम्बे।
जय देवि॥

आप मूलाधार चक्र में वास करती हैं, आप स्वाधिष्ठान में,
और नाभि, हृदय तथा कण्ठ चक्र में वास करती हैं;
आप मुख के जिह्वाग्र में और वेदों के अक्षरों में वास करती हैं।
आपका वास नासिका में, चक्षुओं में,
कर्णों में और ललाट में है।
आप ब्रह्माण्ड में हैं।
आप शीश के ऊपरी भाग में स्थित सहस्रदल कमल में हैं।
आप पूर्ण माता हैं, जो सुन्दर वस्त्रों से सुशोभित हैं
जो कि आपके प्राचुर्य तथा उदारता के प्रतीक हैं।
हे देवी, आपकी जय हो!

पद ३

ज्ञानशुद्धजलस्नानं निर्मलधीवस्त्रे
चित्रगन्धप्रियपुष्पे सहस्राक्षतशीर्षे।
कीर्तनधूपसुगन्धे दीपे तेजस्ते
दिव्यामृतनैवेद्यं गुणताम्बूलमम्बे।
जय देवि॥

आप निर्मल बुद्धिरूपी वस्त्र धारण किए हुए हैं
और आप शुद्ध ज्ञान के जल में स्नात हैं।
हे माते, आपको प्रिय, सहस्त्रों सुगन्धित पुष्पों से हम आपकी अर्चना करते हैं,

हम आपके शीश पर अक्षत की वर्षा करते हैं।
कीर्तन, धूप, सुगन्ध, दीप-ज्योति से
और नैवेद्य के दिव्य अमृत तथा उत्तम ताम्बूल से हम आपका पूजन करते हैं।
हे देवी, आपकी जय हो!

पद ४

श्रीवक्षःस्थितवासमहालक्ष्मी स्मरणे
अखण्डानन्दस्थाने मातस्तवचरणे।
गुरुकृपाचित्रस्थे अम्बे वरदाम्बे
नवदुर्गानवदेवि दुर्लभशरणाम्बे।
जय देवि॥

श्रीविष्णु के वक्ष पर स्थित, महालक्ष्मी के रूप में
आपका स्मरण-चिन्तन किया जाता है।
हे अखण्ड आनन्द की धाम!
हे माते, यह स्तुति आपके श्रीचरणों में अर्पित है।
हे माते, हे वरदायिनी, आप श्रीगुरु की असीम कृपा में वास करती हैं।
हे माते, आप ही आदि शक्ति के विभिन्न रूपों को प्रकट करने वाली
नव दुर्गा, नव देवी हैं
जिनकी शरण मिलना दुर्लभ है।
हे देवी, आपकी जय हो!

‘जय देवि’ आरती

‘जय देवि’ आरती में देवी के अनेक रूपों के माहात्म्य का गुणगान किया गया है, साथ ही यह भी बताया गया है कि साधक के रूप में हम श्रीगुरु की असीम कृपा द्वारा ही अपने जीवन में भगवती शक्ति का अनुभव करते हैं।

सिद्धयोग पथ पर, यह आवाहनकारी व उल्लासमय आरती गुरुमाई चिद्विलासानन्द द्वारा संगीतबद्ध की गई धुन पर गाई जाती है।

विशेष रूप से दक्षिण भारत में लोकप्रिय यह आरती, देवी के ‘ललिता’ व ‘त्रिपुराम्बा’ रूपों की आरती है। ‘ललिता’ का अर्थ है, ‘वे जो क्रीड़ाशील हैं’ और ‘त्रिपुराम्बे’ अर्थात् ‘वे जो तीनों पुरों [लोकों] की जननी हैं’—यह उस दिव्य शक्ति को भी दर्शाता है जो बोध की तीन अवस्थाओं [जागृति, स्वप्न, सुषुप्ति] के मूल में, शुद्ध चिति-तत्त्व के रूप में विद्यमान है।

‘जय देवि’ आरती में देवी को अम्बा यानी ‘माता’ कहा गया है जो सबकी जननी हैं। उनका महिमागान उस शक्ति के रूप में भी किया जाता है जो जगत के रूप-आकारों के परे है तथा आध्यात्मिक साधकों को परम प्राप्ति—भगवान के साथ शाश्वत ऐक्य—तक ले जाती है।

जब हम देवी के लिए यह आरती गाते हैं और उस समय विशेषरूप से थाली में ज्योत रखकर उससे आरती करते हैं जो कि एक शास्त्रोक्त अनुष्ठान है तो हम देवी के दिव्य गुणों का सम्मान कर रहे होते हैं और उनका गुणगान करते हुए आनन्द मनाते हैं तथा अपने अन्दर भी उन्हीं गुणों का आवाहन करते हैं।

© एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।